No of Questions : 30
No of Pages : 5

नामांक

माध्यमिक परीक्षा, 2019

हिन्दी

मॉडल पेपर 9

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड-अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

बसंत में जब पहाड़ों में बर्फ पिघ्यलने लगती है, पर्वत, नदियाँ, प्रचण्ड हो उठती हैं क्योंकि नए पानी के आ जाने से बाढ़ की संभावना बढ़ जाती है, बल्कि उन नदियों में पानी की क्षमता तो कम रहती है लेकिन उसमें गति बहुत तीव्र रहती है। वे तटबंध तोड़ देती हैं और उन्मत्त व्यक्ति की तरह जो अपने तन के कपड़े फाड़ने लगता है। गरज के साथ अपना फेनिल पानी तेजी से बहा ले जाती हुई अपने रास्ते में सब कुछ नष्ट कर देती हैं। वे सैकड़ों वर्ष के पुराने पेड़ उखाड़ देती हैं, बल्लियों को सीने से टक्कर मारती है, पुल तोड़ डालती है और अपने साथ कहीं दूर समुद्र में ले जाती है। इस प्रकार पर्वतीय नदियों में जब बाढ़ आ जाती है तो प्रकृति का सुन्दर रूप बिखर जाता है। मनुष्य, पशु, लट्ठे-सब उन्मत्त नदियों के शिकार हो जाते हैं। फिर वे धीरे-धीरे शान्त और संयत हो जाती हैं और अपनी जगह लौट जाती हैं। किनारों पर सीपियों कीच-कांटे के ढेर लग जाते हैं। प्रकृति का वातावरण बहुत ही विचित्र रूप धारण कर लेता है। चारों ओर वीरान रूप दिखने लगता है। ऐसा प्रतीत होता है वे उन पापों का प्रायश्चित कर रही हों, जो उन्माद के क्षणों में उन्होंने कर डाले थे।

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

2. पहाड़ों में बर्फ पिघलने का नदियों पर क्या प्रभाव पड़ता है? 1

3. नदियों में बाढ़ आने से सर्वाधिक किस की हानि होती है? 2

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बीती विभावरी जाग री!
अम्बर पनघट में डुबो रही–
तारा–घट ऊषा नागरी।
खग–कुल कुल–सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई–
मधु मुकुल नवल रस गागरी।
अधरों में राम अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बंद किये–
तू अब तक सोई है आली!
आँखों में भरे विहाग री!

4. विभावरी से तात्पर्य है– 1

5. **किसलय का अँचल** से अभिप्राय है– 1

6. विहाग है– 2

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
   - (क) प्रस्तावना
   - (ख) नैतिक शिक्षा की कुछ परिभाषाएँ
   - (ग) नैतिक शिक्षा का महत्त्व
   - (घ) नैतिक शिक्षा का लक्ष्य
   - (ड़) विश्व–बन्धुत्व की भावना
   - (च) उपसंहार
2. गणतंत्र दिवस
   - (क) प्रस्तावना
   - (ख) गणतन्त्र दिवस का पूर्व इतिहास
   - (ग) संविधान लागू करना
   - (घ) गणतन्त्र दिवस मनाए जाने की विधि
   - (ड़) राष्ट्रीय पर्व
   - (च) उपसंहार
3. भारत में विमुद्रीकरण/नोटबन्दी : विविध प्रभाव
   - (क) विमुद्रीकरण/नोटबन्दी : एक कदम
   - (ख) विमुद्रीकरण के सकारात्मक प्रभाव
   - (ग) विमुद्रीकरण/नोटबन्दी एवं चुनौतियाँ
   - (घ) उपसंहार
4. भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य
   - (क) प्रस्तावना–भ्रष्टाचार से आशय
   - (ख) विभिन्न क्षेत्रों में भ्रष्टाचार की स्थिति
   - (ग) भ्रष्टाचार का समाज पर प्रभाव

(घ) भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए सुझाव
(ड़) उपसंहार

8. स्वयं को जयपुर निवासी कमल मानते हुए अपने जिले के जिला शिक्षा अधिकारी को पत्र लिखिए, जिसमें आपके विद्यालय में रिक्त पदों पर शिक्षक लगाने का निवेदन हो। 4

अथवा

8. आप विजय सीनियर सैकण्डरी स्कूल, जोधपुर की विज्ञान अध्यापिका कल्पना शर्मा हैं। आपके विद्यालय का परीक्षा परिणाम पूरे प्रदेश में सर्वोत्तम रहा है। स्टॉफ प्रतिनिधि के रूप में आप अपनी प्राचार्या श्रीमती भूमिका चौधरी को बधाई–पत्र लिखिए।

9. अकर्मक क्रिया किसे कहते हैं? लिखिए। 2

10. निम्नलिखित कर्मवाच्यों को कर्तृवाच्यों में बदलिए– 3
1. माता द्वारा पुत्र की पिटाई की गई।
2. गायक द्वारा गीत गाये जायेंगे।
3. लड़के द्वारा मिठाई बाँटी जा रही है।

11. 1. **नवरत्न** तथा **दशानन** शब्द किस–किस समास के उदाहरण हैं?
2. कर्मधारय समास की परिभाषा तथा उसका एक उदाहरण लिखिए। 2

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$
1. दीपांश बड़ा बोलता है।
2. उसके बच्चे छोटा है।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$
1. बढ़ा–चढ़ाकर दिखाना
2. फलना–फूलना

14. **अक्ल बड़ी या भैंस** लोकोक्ति का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए– 1

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

और आज
ऊपर–ही–ऊपर तन गए हैं
तुम्हारे तंबू,
और आज
छमका रही है पावस रानी
बूँदा–बूँदियों की अपनी पायल,
और आज
चालू हो गई है
झींगुरों की शहनाई अविराम,
और आज,
जोरों से कूक पड़े
नाचते थिरकते मोर,

और आज
आ गई वापस जान
दूब की झुलसी शिराओं के अन्दर,
और आज विदा हुआ चुपचाप ग्रीष्म
समेटकर अपने लाव–लश्कर।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
उषा की लाली में
अभी से गए निखर
हिमगिरि के कनक–शिखर।
आगे बढ़ा शिशु–रवि
बदली छवि, बदली छवि
देखता रह गया अपलक कवि।
डर था, प्रतिपल
अपरूप यह जादुई आभा
जाए न बिखर, जाए न बिखर।
उषा की लाली में
भले हो उठे थे निखर
हिमगिरि के कनक शिखर।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6
गौरा को देखते ही मेरी पालने के सम्बन्ध में दुविधा निश्चय में बदल गई। गाय जब मेरे बँगले पर पहुँची, तब मेरे परिचितों और परिचारकों में श्रद्धा का ज्वार–सा उमड़ आया। उसे लाल–सफेद गुलाबों की माला पहनाई, केशर–रोली का बड़ा–सा टीका लगाया गया, घी का चौमुखा दिया जलाकर आरती उतारी गई और उसे दही–पेड़ा खिलाया गया। उसका नामकरण हुआ गौरांगिनी या गौरा। पता नहीं, इस पूजा–अर्चना का उस पर क्या प्रभाव पड़ा, परन्तु वह बहुत प्रसन्न जान पड़ी। उसकी बड़ी, चमकीली और काली आँखों से जब आरती के दिये की लौ प्रतिफलित होकर झिलमिलाने लगी, तब कई दियों का भ्रम होने लगा। जान पड़ा, जैसे रात में काली दिखने वाली लहर पर किसी ने कई दिये प्रवाहित कर दिये हों।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–
गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शिनी थी, विशेषतः उसकी काली बिल्लौरी आँखों का तरल सौन्दर्य तो दृष्टि को बाँधकर स्थिर कर देता था। चौड़े, उज्ज्वल माथे और लम्बे तथा साँचे में ढले हुए से मुख पर आँखें बर्फ में नीले जल के कुण्डों के समान लगती थीं। उनमें एक अनोखा विश्वास का भाव रहता था। गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों–जैसा चकित विस्मय न होकर एक आत्मीय विश्वास ही रहता था। उस पशु को मनुष्य से यातना ही नहीं, निर्मम मृत्यु तक प्राप्त होती है, परन्तु उसकी आँखों के विश्वास का स्थान न विस्मय ले पाता है, न आतंक। महात्मा गाँधी ने **गाय करुणा की कविता है**, क्यों कहा, यह उसकी आँखें देखकर ही समझ में आ सकता है।

17. **कल और आज** कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए। 6

अथवा

17. **उषा की लाली** कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

18. निम्नांकित यातायात संकेतों का क्या अर्थ है? 6

(1) 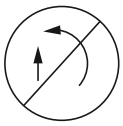

(2) 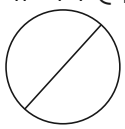

(3) 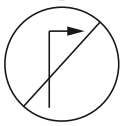

(4) 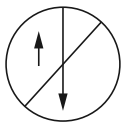

अथवा

18. कार आदि छोटे वाहनों को चलाते समय क्या सावधानी रखनी चाहिए?

19. ग्रीष्म ऋतु में बादल और हवा की क्या स्थिति हो गई है? 2

20. सभी पुकार करके क्या कहते हैं? 2

21. एक कन्या के मन में वैवाहिक जीवन की कैसी कल्पनाएँ होती हैं? 2

22. पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना क्या उनके अनपढ़ होने का सबूत है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

23. **तुम्हारी निन्दा वही करेगा जिसकी तुमने भलाई की है।** कथन को स्पष्ट करें। 2

24. सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित आपके कोई चार कर्त्तव्य लिखिए। 2

25. कवि ने आसमान को बदरंग क्यों बताया है? 1

26. **अपने चेहरे पर मत रीझना** का क्या तात्पर्य है? 1

27. पीपा के आने पर स्वामी रामानन्द ने आश्रम का दरवाजा बंद क्यों करवा दिया? 1

28. प्रेमचन्द उर्दू में किस नाम से लेखन कार्य करते थे? 1

29. कवि ऋतुराज का साहित्यिक परिचय दीजिए। 4

30. लक्ष्मीनारायण रंगा के व्यक्तित्व–कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

□□□□□□□

राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019
10वीं कक्षा
हिन्दी
मॉडल पेपर–9

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड–अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बसंत में जब पहाड़ों में बर्फ पिघलने लगती है, पर्वत, नदियाँ, प्रचण्ड हो उठती हैं क्योंकि नए पानी के आ जाने से बाढ़ की संभावना बढ़ जाती है, बल्कि उन नदियों में पानी की क्षमता तो कम रहती है लेकिन उसमें गति बहुत तीव्र रहती है। वे तटबंध तोड़ देती हैं और उन्मत्त व्यक्ति की तरह जो अपने तन के कपड़े फाड़ने लगता है। गरज के साथ अपना फेनिल पानी तेजी से बहा ले जाती हुई अपने रास्ते में सब कुछ नष्ट कर देती हैं। वे सैकड़ों वर्ष के पुराने पेड़ उखाड़ देती हैं, बल्लियों को सीने से टक्कर मारती है, पुल तोड़ डालती है और अपने साथ कहीं दूर समुद्र में ले जाती है। इस प्रकार पर्वतीय नदियों में जब बाढ़ आ जाती है तो प्रकृति का सुन्दर रूप बिखर जाता है। मनुष्य, पशु, लट्ठे–सब उन्मत्त नदियों के शिकार हो जाते हैं। फिर वे धीरे–धीरे शान्त और संयत हो जाती हैं और अपनी जगह लौट जाती हैं। किनारों पर सीपियों कीच–कांटे के ढेर लग जाते हैं। प्रकृति का वातावरण बहुत ही विचित्र रूप धारण कर लेता है। चारों ओर वीरान रूप दिखने लगता है। ऐसा प्रतीत होता है वे उन पापों का प्रायश्चित कर रही हों, जो उन्माद के क्षणों में उन्होंने कर डाले थे।

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर :
प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक– उन्मादिनी नदियां।

2. पहाड़ों में बर्फ पिघलने का नदियों पर क्या प्रभाव पड़ता है? 1

उत्तर :
पहाड़ों में बर्फ पिघलने से नदियों में पानी का स्तर एवं गति बढ़ सकती है।

3. नदियों में बाढ़ आने से सर्वाधिक किस की हानि होती है? 2

उत्तर :
नदियों में बाढ़ आने से सर्वाधिक हानि कृषि, पशु, धन–सम्पत्ति व मनुष्य की होती है।

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बीती विभावरी जाग री!
अम्बर पनघट में डुबो रही–
तारा–घट ऊषा नागरी।
खग–कुल कुल–सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई–
मधु मुकुल नवल रस गागरी।
अधरों में राम अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बंद किये–
तू अब तक सोई है आली!
आँखों में भरे विहाग री!

4. विभावरी से तात्पर्य है– 1

उत्तर :
विभावरी का तात्पर्य रात्रि से है।

5. **किसलय का अँचल** से अभिप्राय है– 1

उत्तर :
किसलय का अँचल से अभिप्राय कोमल पत्तों रूपी आँचल से है।

6. विहाग है– 2

उत्तर :
विहाग एक राग है।

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
   (क) प्रस्तावना
   (ख) नैतिक शिक्षा की कुछ परिभाषाएँ
   (ग) नैतिक शिक्षा का महत्त्व
   (घ) नैतिक शिक्षा का लक्ष्य
   (ड़) विश्व–बन्धुत्व की भावना
   (च) उपसंहार
2. गणतंत्र दिवस
   (क) प्रस्तावना
   (ख) गणतन्त्र दिवस का पूर्व इतिहास
   (ग) संविधान लागू करना
   (घ) गणतन्त्र दिवस मनाए जाने की विधि
   (ड़) राष्ट्रीय पर्व
   (च) उपसंहार
3. भारत में विमुद्रीकरण/नोटबन्दी : विविध प्रभाव
   (क) विमुद्रीकरण/नोटबन्दी : एक कदम
   (ख) विमुद्रीकरण के सकारात्मक प्रभाव
   (ग) विमुद्रीकरण/नोटबन्दी एवं चुनौतियाँ
   (घ) उपसंहार
4. भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य
   (क) प्रस्तावना–भ्रष्टाचार से आशय
   (ख) विभिन्न क्षेत्रों में भ्रष्टाचार की स्थिति
   (ग) भ्रष्टाचार का समाज पर प्रभाव
   (घ) भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए सुझाव
   (ड़) उपसंहार

उत्तर :

1. नैतिक शिक्षा की उपयोगिता

(क) **प्रस्तावना –** नैतिक शिक्षा का तात्पर्य है– उन गुणों की या आस्थाओं की शिक्षा, जिन पर व्यक्ति की निजी और सम्पूर्ण समाज की उन्नति निर्भर रहती है। नैतिक शिक्षा द्वारा ही मानव के सद्गुणों का विकास संभव होता है क्योंकि व्यक्ति समाज का ही एक अनिवार्य अंग है, इस प्रकार उसके सद्गुणों के विकास का अर्थ है–सम्पूर्ण समाज के सद्गुणों का विकास।

(ख) **नैतिक शिक्षा की कुछ परिभाषाएँ –** महात्मा गाँधी नैतिक कार्य उसे मानते थे, जिसमें सदा सार्वजनिक कल्याण की भावना समाहित हो। स्वंय की इच्छा से शुभ कर्मों का आचरण ही नैतिकता है।

पंडित मदन मोहन मालवीय के कथनानुसार, **नैतिकता मनुष्य की उन्नति का मूल आधार है। नैतिकता–विहीन मनुष्य पशु से भी निम्न कोटि का होता है। नैतिकता एक व्यापक गुण है।**

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन – के अनुसार, **नैतिकता व्यक्ति के आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं सामाजिक विकास का आधार है। नैतिकता का प्रभाव व्यक्ति के सभी क्रिया–कलापों पर पड़ता है।**

पश्चिमी विचारक नैतिकता को एक धार्मिक गुण मानते हैं। इन गुणों में आत्म–संयम, त्याग, दया, परोपकार, सहिष्णुता, सेवा आदि शामिल हैं।

(ग) **नैतिक शिक्षा का महत्त्व –** वर्तमान में नैतिक शिक्षा का महत्त्व पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ गया है। नैतिक शिक्षा मानव की प्रवृत्तियों को जागृत करती है। नैतिक शिक्षा ही मानवता का मूल मन्त्र है। नैतिक शिक्षा के अभाव में मानवता का विकास नहीं हो सकता क्योंकि मानव की बुरी वृत्तियाँ ही संसार के लिए अभिशाप हैं। नैतिक शिक्षा के द्वारा इन्हें केवल नियन्त्रित ही नहीं किया जा सकता, अपितु हमेशा के लिए समाप्त किया जा सकता है, जिसमें मानवता का विकास अबाध गति से हो सकता है।

(घ) **नैतिक शिक्षा का लक्ष्य –** नैतिक शिक्षा का लक्ष्य बहुत विस्तृत है जिसका उल्लेख करना असम्भव है, किन्तु यहाँ कुछ प्रमुख लक्ष्यों का उल्लेख करना अत्यन्त आवश्यक है।

नैतिक शिक्षा का मुख्य लक्ष्य छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है ताकि वे बड़े होकर आदर्श नागरिक बन सकें। सदाचार, अनुशासन, संयम, विनम्रता, करुणा, परोपकार, साहस, मानव–प्रेम, देश–भक्ति, धैर्यशीलता आदि नैतिक गुण हैं। मानव में इनका उत्तरोत्तर विकास अत्यन्त आवश्यक है।

(ड़) **विश्व–बन्धुत्व की भावना –** नैतिक शिक्षा का दूसरा प्रमुख लक्ष्य छात्र–छात्राओं में विश्व–बन्धुत्व की भावना को पैदा करना है। जब छात्र–छात्राओं में यह भावना जागृत हो जाएगी तो मानवता का विशाल रूप हमारे समाने स्वतः आ खड़ा होगा। हमारा **वसुधैव कुटुम्बकम्** का स्वप्न साकार हो जाएगा।

छात्र–छात्राओं में सहनशीलता का उदार गुण उत्पन्न करना भी नैतिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। वर्तमान में संसार में लड़ाई–झगड़े दंगे–फसाद हर समय होते रहते हैं। कहीं धर्म के नाम पर तो कहीं प्रदेश के नाम पर और कहीं जाति या सम्प्रदाय के प्रश्न को लेकर इन सभी दंगों या झगड़ों को छात्र–छात्राओं में सहनशीलता की भावना पैदा करके रोका जा सकता है। अतः नैतिक शिक्षा के द्वारा ही सहनशीलता का गुण विकसित किया जा सकता है।

(च) **उपसंहार –** सार रूप में कहा जा सकता है कि नैतिक शिक्षा आज के छात्र–छात्राओं के लिए अति आवश्यक है। नैतिक शिक्षा के द्वारा जहाँ उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होगा वहाँ उनके चरित्र का निर्माण भी होगा। नैतिक–शिक्षा में प्रविण नागरिक ही देश का उद्धार कर सकते हैं तथा समाज को समृद्ध बना सकते हैं। इसलिए नैतिक शिक्षा हमारे पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग होनी चाहिए।

2. गणतंत्र दिवस

प्रजातन्त्र के दीप जले हैं, आज नई तरुणाई ले।
भारतमाता की जय बोले, देश नई अँगड़ाई ले।।

(क) **प्रस्तावना –** किसी भी देश के जीवन में राष्ट्रीय त्योहारों का अत्यन्त महत्त्व होता है। हमारे राष्ट्रीय त्योहारों में **स्वतन्त्रता–दिवस** और **गणतन्त्र–दिवस** प्रमुख हैं। 15 अगस्त हमारा स्वतन्त्रता दिवस होता है, क्योंकि 15 अगस्त, 1947 को हमारे देश को कई सदियों के बाद स्वतन्त्रता मिली थी। 26 जनवरी को हमारे **गणतन्त्र–दिवस** का राष्ट्रीय पर्व होता है। इस शुभ (26 जनवरी, 1950) दिन को हमारा देश पूर्ण गणतन्त्र राष्ट्र घोषित हुआ था।

(ख) **गणतन्त्र दिवस का पूर्व इतिहास –** गणतन्त्र दिवस के पीछे एक इतिहास है। 31 दिसम्बर, 1929 को रावी नदी के किनारे लाहौर में काँग्रेस का अधिवेशन हुआ था जिसकी अध्यक्षता पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने की थी। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि **काँग्रेस का ध्येय पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति है।** 26 जनवरी को तिरंगे की शपथ

लेकर लाखों लोगों ने प्रतिज्ञा की कि हमारा लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करना है और इसकी प्राप्ति के लिए हम अपना सर्वस्व न्यौछावर भी कर देंगे।

(ग) **संविधान लागू करना –** 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान लागू किया गया। इसी दिन भारत को गणतन्त्र राज्य की मान्यता मिली। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को देश का प्रथम राष्ट्रपति बनाया गया।

(घ) **गणतन्त्र दिवस मनाए जाने की विधि –** भारतीय इतिहास में गणतन्त्र-दिवस का अत्यधिक महत्त्व है। इस शुभ दिन को देशभर में बड़े उत्साह और उमंग से मनाया जाता है। इस दिन लोगों में उत्साह और प्रेरणा जागृत करने के लिए विभिन्न राज्यों में सरकार की ओर से आनन्दवर्द्धक कार्यक्रम रखे जाते हैं। प्रातः राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ-साथ सैनिक परेड, युद्ध-सामग्री का प्रदर्शन, स्कूल तथा कॉलेज के छात्र-छात्राओं के कार्यक्रम, विभिन्न प्रान्तों के पहनावे आदि का रूप प्रदर्शित किया जाता है। सम्पूर्ण देश एक अत्यधिक उत्साह-उमंग में डूब जाता है।

(ड़) **राष्ट्रीय पर्व –** गणतन्त्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है। वैसे तो प्रत्येक नगर, गाँव इस पर्व को बहुत उत्साहपूर्वक मनाता है, लेकिन देश की राजधानी दिल्ली का आलम कुछ और ही होता है। दिल्ली में राष्ट्रपति की राजकीय सवारी निकलती है। विजय चौक पर राष्ट्रपति जल, थल एवं वायु सेना की सलामी लेते हैं। वायुयान आकाश में तथा तोपें धरती पर भारत के राष्ट्रपति का अभिवादन करती हैं। तीनों सेनाओं की टुकड़ियाँ मार्च करती हुईं लालकिले तक पहुँचती हैं। विभिन्न प्रकार की झाँकियाँ 26 जनवरी की शोभा यात्रा में चार चाँद लगा देती हैं। अपने-अपने प्रान्तों की वेश-भूषा से लोक-नर्तक नृत्य-प्रदर्शन से अपनी प्रान्तीय संस्कृति का परिचय देते हैं।

(च) **उपसंहार –** सार रूप में कहा जा सकता है कि 26 जनवरी का राष्ट्रीय उत्सव भारतीय नागरिकों के मन में एक अलग उत्साह और आत्मचिन्तन की भावना भरने वाला उत्सव है। इस पर्व में प्रत्येक भारतीय नागरिक को बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। इस दिन भारतवासियों को यह विचार करना चाहिए कि हमने क्या खोया और क्या पाया? हमें अपने द्वारा निश्चित की गई योजनाओं में कहाँ तक सफलता मिली है। जो लक्ष्य हमने निर्धारित किए थे, उन्हें प्राप्त करने में हम कहाँ तक सफल हुए हैं। इस प्रकार हमें इस शुभ अवसर पर आत्म-संकल्प करते हुए आगे बढ़ने का निश्चय दोहराना चाहिए।

3. भारत में विमुद्रीकरण/नोटबन्दी : विविध प्रभाव

(क) **विमुद्रीकरण/नोटबन्दी : एक कदम –** विमुद्रीकरण या नोटबन्दी वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सरकार किसी भी मूल्य-वर्ग की मुद्राओं को अवैध घोषित कर उसे चलन से बाहर कर देती है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि इस प्रक्रिया के द्वारा राष्ट्रीय मुद्रा में परिवर्तन किया जाता है तथा पुरानी मुद्रा के स्थान पर नई मुद्रा लाई जाती है। इसका ताजा उदाहरण हमारे सामने तब आया जब भारत सरकार ने 8 नवम्बर, 2016 को ₹500 एवं ₹1000 के नोट की वैधता रात्रि 12 बजे के बाद निरस्त करने की घोषण की थी।

भारत सरकार द्वारा इस विमुद्रीकरण का मूल उद्देश्य काले धन पर प्रतिबंध लगाना एवं जाली नोटों पर नियन्त्रण करना था।

(ख) **विमुद्रीकरण के सकारात्मक प्रभाव –** भारतीय अर्थव्यवस्था पर विमुद्रीकरण या नोटबन्दी के निम्न सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं-

1. अर्थव्यवस्था में नोटबन्दी से जाली नोटों की समस्या लगभग समाप्त हो गई है।
2. अर्थव्यवस्था में उपस्थित काले धन पर नियन्त्रण लगा है।
3. देश में नोटबन्दी से आतंकवादियों, नक्सलवादियों, उग्रवादियों आदि के आर्थिक संसाधनों का समापन हुआ है।
4. बैंकिंग व्यवस्था में बड़ी मात्रा में नगदी प्राप्त हुई है तथा लोगों का बेकार पड़ा धन बैंकों तक पहुँचा है जो उत्पादक ऋण देने में उपयोगी साबित होगा। तरलता बढ़ने से ब्याज दरों में भी कमी आयी है।
5. नोटबन्दी से डिजिटल लेन-देनों का प्रसार हुआ है, जिससे अर्थव्यवस्था की पारदर्शिता में वृद्धि हुई।

(ग) **विमुद्रीकरण/नोटबन्दी एवं चुनौतियाँ –** भारतीय अर्थव्यवस्था में अधिकांश आर्थिक गतिविधियाँ नकद होती हैं, लोग अशिक्षित हैं तथा अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण है, ऐसी स्थिति में नोटबन्दी के उद्देश्यों की सफलता के रास्ते में कई चुनौतियाँ हैं। कुछ समय के लिए ही सही आम जनता को विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। असंगठित क्षेत्र के सामने आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया। लोगों ने खातों में गलत लेन-देन से काले धन को सफेद बनाने का प्रयास किया। अतः विमुद्रीकरण की सफलता के लिए सरकार को सभी लेन-देनों पर नजर रखनी होगी एवं आवश्यक जाँच करवानी होगी।

(घ) **उपसंहार –** विमुद्रीकरण से लोगों को अनेक कठिनाइयों एवं समस्याओं का समाना करना पड़ा, किन्तु उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता भी मिली है। इससे भ्रष्टाचार पर प्रतिबंध लगा है तथा पारदर्शिता बढ़ी है। किन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिए कि कालेधन का सृजन रुक गया है। इसके लिए सरकार को रणनीति तैयार करनी होगी तथा कई अन्य कदम भी उठाने होंगे केवल एक विमुद्रीकरण या नोटबन्दी से सालों से चली आ रही कालेधन, भ्रष्टाचार, जाली नोट आदि की समस्याओं को दूर नहीं किया जा सकता।

4. भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य

(क) **प्रस्तावना-भ्रष्टाचार से आशय –** स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही हमारे सामने नये स्वतन्त्र राष्ट्र के निर्माण की समस्या मुख्य थी; परन्तु साथ ही साम्प्रदायिकता, जातिवाद, प्रान्तवाद, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार की समस्याएँ भी उत्तरोत्तर बढ़ती गईं; आज यह स्थिति है कि इन सभी समस्याओं से सम्पूर्ण देश आक्रान्त है। इनमें भी भ्रष्टाचार की समस्या सम्पूर्ण देश में इस तरह बढ़ रही है कि इसका निवारण करना अत्यधिक कठिन हो गया है।

भ्रष्टाचार का अर्थ आचरण से भ्रष्ट होना है। वर्तमान में हमारे देश में भ्रष्टाचार, स्वार्थ साधने तथा अपना घर भरने का सरल साधन बन गया है, इसलिए जिसे देखो, वह भ्रष्टाचार में लिप्त हो रहा है। आज बड़े-बड़े राजनेताओं, अधिकारियों से लेकर सामान्य कर्मचारी तक भ्रष्टाचरण कर रहे हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति अनैतिकता से धनार्जन करने में लगा है।

(ख) **विभिन्न क्षेत्रों में भ्रष्टाचार की स्थिति –** आज भ्रष्टाचार हमारे देश के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से फैल रहा है। चाहे वह शिक्षा-क्षेत्र हो, व्यवसाय हो, उद्योग हो, धर्म हो, राजनीति हो,

यहाँ तक कला और विज्ञान भी इस छूत की बीमारी से मुक्त नही है। सरकारी कार्यालय, न्यायालय, अस्पताल आदि सभी जगह भ्रष्टाचार स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, बिना सुविधा शुल्क के आपका काम नहीं होगा। इसलिए आज प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार की जय बोली जा रही है।

(ग) **भ्रष्टाचार का समाज पर प्रभाव –** भ्रष्टाचार के कुप्रभाव से नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्य दिखावे की वस्तु बन गए हैं। स्वार्थ और लालच के चक्कर में हम अपने सामाजिक आदर्शों को भूलते जा रहे हैं। हमारे नेता एवं बड़े अफसर भ्रष्ट तरीके अपनाकर जन–सेवा के नाम पर अपने ही परिवार की सेवा करते हैं। हर काम में दलाली, कमीशन व रिश्वत लेकर जनता के सामने सफेदपोश बनने की इच्छा करते हैं, तो उनकी नकल से सरकारी कर्मचारी, अफसर और जनता भी वैसा ही आचरण करने लगी है। भ्रष्टाचार के लिए झूठ बोलना, मिलावट करना, धोखाधड़ी और रिश्वतखोरी करना आदि सब कुछ जायज हो गया है। उसे रोकने वाला कोई नहीं है। परिणामतः समाज पर विपरित प्रभाव पड़ रहा है।

(घ) **भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए सुझाव –** भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने के लिए यद्यपि सरकार ने अलग से भ्रष्टाचार उन्मूलन विभाग बना रखा है और उसे व्यापक अधिकार दे रखे हैं। समय–समय पर इसके उन्मूलन के लिए अनेक कानून बनाये जा रहे हैं, बने कानूनों में संशोधन किया जा रहा है और भ्रष्टाचरण को अपराध मानकर कठोर दण्ड व्यवस्था का नियम भी विद्यमान है, फिर भी देश में भ्रष्टाचार बढ़ ही रहा है। इसके उन्मूलन के लिए जन–जागरण की अत्यंत आवश्यकता है।

(ड़) **उपसंहार –** भारत जैसे विकासशील लोकतन्त्र में भ्रष्टाचार का होना एक विडम्बना है। इसके कारण आज हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में कमी हो रही हैं। राष्ट्रीय चरित्र पर कीचड़ उछाला जा रहा है तथा हमारा नैतिक स्तर एकदम निन्दनीय बन गया है। इसके लिए राजनेताओं, सरकारी तन्त्र और जनता का पारस्परिक सहयोग अपेक्षित है।

8. स्वयं को जयपुर निवासी कमल मानते हुए अपने जिले के जिला शिक्षा अधिकारी को पत्र लिखिए, जिसमें आपके विद्यालय में रिक्त पदों पर शिक्षक लगाने का निवेदन हो। 4

उत्तर :

प्रतिष्ठा में,

जिला शिक्षा अधिकारी,
जिला क, ख, ग,
जयपुर।

विषय : विद्यालय में रिक्त पदों पर शिक्षक लगाने हेतु निवेदन–पत्र।

महोदय,

उपर्युक्त विषय में निवेदन है कि मैं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर की कक्षा दस का छात्र हूँ। हमारे विद्यालय में अंग्रेजी, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान विषयों के पद लगभग अगस्त माह से रिक्त चल रहे हैं। शिक्षकों के अभाव में उक्त विषयों का अध्ययन–अध्यापन नहीं हो रहा है, जिससे हम विद्यार्थियों को अपना भविष्य अन्धकारमय होता दिखाई देने लगा है। हमने अनेक बार अपनी व्यथा प्रधानाचार्य महोदय के समक्ष भी व्यक्त की है, लेकिन उनका कहना है कि शिक्षकों की नियुक्ति उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं है।

अतः सब ओर से निराश होकर आपसे निवेदन कर रहे हैं कि विद्यालय में विज्ञान, अंग्रेजी और सामाजिक विज्ञान विषयों के रिक्त पदों पर शिक्षकों की नियुक्ति अतिशीघ्र करने–करवाने की कृपा करें। इस कृपा के लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।

प्रार्थी
कमल
विद्यार्थी–राजकीय
उच्च माध्यमिक विद्यालय,
जयपुर।

दिनांक : 28 नवम्बर, 2018

अथवा

8. आप विजय सीनियर सैकण्डरी स्कूल, जोधपुर की विज्ञान अध्यापिका कल्पना शर्मा हैं। आपके विद्यालय का परीक्षा परिणाम पूरे प्रदेश में सर्वोत्तम रहा है। स्टॉफ प्रतिनिधि के रूप में आप अपनी प्राचार्या श्रीमती भूमिका चौधरी को बधाई–पत्र लिखिए।

उत्तर :

प्रेषक
कल्पना शर्मा
स्टॉफ प्रतिनिधि,
विजय सीनियर सैकण्डरी स्कूल,
जोधपुर।
दिनांक : 17 अगस्त, 2017

प्रेषिती–
श्रीमती भूमिका/जोधपुर।
प्राचार्या,
विजय सीनियर सैकण्डरी स्कूल,
जोधपुर।
महोदया,

हम सबके लिए यह अत्यन्त सुखद और सौभाग्य की बात है कि इस बार हमारे विद्यालय का परीक्षा परिणाम पूरे राजस्थान के विद्यालयों में सर्वोत्तम रहा है। इसके लिए आपको बोर्ड द्वारा सम्मानित किया गया है। हम सभी शिक्षक आपकी कर्त्तव्यनिष्ठा और कार्यशैली की प्रशंसा करते हैं। आपके मार्ग–दर्शन में कार्य करके यह उपलब्धि विद्यालय को प्राप्त हुई है। इस सम्मान के लिए आप सचमुच बधाई की पात्र हैं। हम सभी की ओर से बधाई स्वीकार करें।

सधन्यवाद!

(हस्ताक्षर)
कल्पना शर्मा

9. अकर्मक क्रिया किसे कहते हैं? लिखिए। 2

उत्तर :

जिस क्रिया का कोई कर्म नहीं होता, अपितु उसका प्रभाव कर्त्ता पर ही पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–

1. दीपाली रो रही है।
2. अर्श तैर रहा है।

10. निम्नलिखित कर्मवाच्यों को कर्तृवाच्यों में बदलिए– 3

1. माता द्वारा पुत्र की पिटाई की गई।

2. गायक द्वारा गीत गाये जायेंगे।
3. लड़के द्वारा मिठाई बाँटी जा रही है।

उत्तर :

1. माता ने पुत्र की पिटाई की।
2. गायक गीत गायेगा।
3. लड़का मिठाई बाँट रहा है।

11. 1. **नवरत्न** तथा **दशानन** शब्द किस-किस समास के उदाहरण हैं?
2. कर्मधारय समास की परिभाषा तथा उसका एक उदाहरण लिखिए। 2

उत्तर :

1. **नवरत्न** द्विगु समास का, **दशानन** बहुव्रीहि समास का उदाहरण है।
2. जिस सामासिक शब्द में विशेषण और विशेष्य साथ-साथ हों उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे- नीलगाय- नीली है जो गाय।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. दीपांश बड़ा बोलता है।
2. उसके बच्चे छोटा है।

उत्तर :

1. दीपांश बहुत बोलता है।
2. उसके बच्चे छोटे हैं।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना
2. फलना-फूलना

उत्तर :

1. **बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना** (दिखावा करना)- आजकल विवाह-शादियों में हैसियत न होने पर भी लोग बढ़ा-चढ़ाकर सब कुछ दिखाते हैं।
2. **फलना-फूलना** (उन्नति करना)- राम का व्यापार दिनोंदिन फलता-फूलता जा रहा है।

14. **अक्ल बड़ी या भैंस** लोकोक्ति का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए- 1

उत्तर :

अक्ल बड़ी या भैंस (शरीर की अपेक्षा बुद्धि बड़ी होती है)- लक्ष्य मोटा तगड़ा लड़का है लेकिन पढ़ने में कमज़ोर इसलिए गुरू जी प्रायः कहते हैं अक्ल बड़ी या भैंस।

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

और आज
ऊपर-ही-ऊपर तन गए हैं
तुम्हारे तंबू,
और आज
छमका रही है पावस रानी
बूँदा-बूँदियों की अपनी पायल,
और आज
चालू हो गई है
झींगुरों की शहनाई अविराम,
और आज,
जोरों से कूक पड़े
नाचते थिरकते मोर,
और आज
आ गई वापस जान
दूब की झुलसी शिराओं के अन्दर,
और आज विदा हुआ चुपचाप ग्रीष्म
समेटकर अपने लाव-लश्कर।

उत्तर :

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश कवि नागार्जुन द्वारा रचित **कल और आज** कविता से लिया गया है। इसमें कवि ने वर्षा ऋतु के आगमन का वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि वर्णन करता है कि ग्रीष्म ऋतु के बीत जाने और वर्षा ऋतु के आरम्भ होने से आकाश में बादलों के घटारूपी तम्बू तन गये हैं और आज वर्षा ऋतु रूपी सुन्दरी लगातार बूँदा-बूँदियों के द्वारा मानो अपनी पायल छमका रही थी। भाव यह है कि वर्षा की बूँदें छम-छमकर गिरने लगी हैं। इस मौसम में झींगुर भी लगातार अपने स्वर रूपी शहनाई को बजाने लग गये हैं, यह प्रतीत हो रहा है कि वे वर्षा रानी के स्वागत में शहनाई बजा रहे हैं तथा मोर भी नाचते हुए जोरों से केकारव करने लगे हैं। आज वर्षा-ऋतु के आगमन से दूब की गर्मी से झुलसी हुई नोकों या अग्रभागों में वापस जान आ गई है, उनमें हरीतिमा उभरने लगी है तथा आज ग्रीष्म भी अपना सम्पूर्ण साजो-सम्मान तथा संगी-साथियों को समेट कर इस धरती से चुपचाप विदा हो गया है, अर्थात् संसार को तपा देने वाला ग्रीष्मकाल अब अपना सम्पूर्ण ताम-झाम, तपन-लू आदि को समेट कर चुपचाप चला गया है।

विशेष-

1. बादलों को आकाश में तने हुए तम्बू, बूँदा-बूँदी को पायल की छमक, झींगुरों का स्वर शहनाई-वादन और ग्रीष्म को लाव-लश्कर सहित चले जाने वाला यात्री बताकर कवि ने सुन्दर कल्पना की है।
2. प्रकृति-चित्रण सुकोमल भावपूर्ण हुआ है। रूपक एवं मानवीकरण अलंकार की योजना सुन्दर है।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
उषा की लाली में
अभी से गए निखर
हिमगिरि के कनक-शिखर।
आगे बढ़ा शिशु-रवि
बदली छवि, बदली छवि
देखता रह गया अपलक कवि।
डर था, प्रतिपल
अपरूप यह जादुई आभा
जाए न बिखर, जाए न बिखर।
उषा की लाली में
भले हो उठे थे निखर

हिमगिरि के कनक शिखर।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश कवि नागार्जुन द्वारा रचित **उषा की लाली** शीर्षक लघु कविता है। इसमें उषा–काल में प्राकृतिक परिवेश में जो लालिमा छा जाती है, उसका सुन्दर चित्रण किया गया है।

व्याख्या– कवि वर्णन करते हुए कहता है कि उषा की लालिमा में हिमालय की चोटियाँ स्वर्णिम चमक से निखर गयी हैं, वे सोने के जैसे लग रही हैं। उषा काल में सूर्य जब कुछ आगे बढ़ा, तो कवि उसकी बदली हुई मनोरम छवि को निरतर देखता ही रहा तथा आश्चर्यचकित हो गया। उस समय कवि को यह भय हो रहा था कि कहीं प्रातःकाल की यह चमत्कारी शोभा बेरंग न हो जाये, कहीं यह प्राकृतिक सौन्दर्य शीघ्र बिखर न जावे। उषा की लालिमा जब धरती एवं हिमालय पर फैली, तो उससे सम्पूर्ण परिवेश स्वर्णिम आभा से रंग गया, सब ओर स्वच्छ चमक फैल गई और हिमालय के बर्फीले शिखर सोने के समान चमकने लगे, जिससे कवि को उषा की लाली अत्यधिक मुग्धकारी लगने लगी।

विशेष–

1. कवि ने उषाकालीन लालिमा के प्रभाव से स्वर्णिम आभामय परिवेश का भावपूर्ण चित्रण किया है।
2. उषा काल का शब्द–चित्र उभरा है। अनुप्रास एवं रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है। मुक्त छन्द की तुकान्त–योजना दर्शनीय है।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

गौरा को देखते ही मेरी पालने के सम्बन्ध में दुविधा निश्चय में बदल गई। गाय जब मेरे बँगले पर पहुँची, तब मेरे परिचितों और परिचारकों में श्रद्धा का ज्वार–सा उमड़ आया। उसे लाल–सफेद गुलाबों की माला पहनाई, केशर–रोली का बड़ा–सा टीका लगाया गया, घी का चौमुखा दिया जलाकर आरती उतारी गई और उसे दही–पेड़ा खिलाया गया। उसका नामकरण हुआ गौरांगिनी या गौरा। पता नहीं, इस पूजा–अर्चना का उस पर क्या प्रभाव पड़ा, परन्तु वह बहुत प्रसन्न जान पड़ी। उसकी बड़ी, चमकीली और काली आँखों से जब आरती के दिये की लौ प्रतिफलित होकर झिलमिलाने लगी, तब कई दियों का भ्रम होने लगा। जान पड़ा, जैसे रात में काली दिखने वाली लहर पर किसी ने कई दिये प्रवाहित कर दिये हों।

उत्तर :

संदर्भ व प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित महादेवी वर्मा द्वारा रचित संस्मरणात्मक रेखाचित्र **गौरा** से लिया गया है। महादेवी की बहन श्यामा ने उनको गाय पालने का सुझाव दिया। श्यामा ने अपने घर में पली हुई गाय की जवान बछिया को उनके पास भेजा। महादेवी ने ध्यानपूर्वक उसको देखा। अब तक महादेवी गाय पालने के सम्बन्ध में निश्चित नहीं थी परन्तु भेजी गई गाय को देखते ही उन्होंने गाय पालने का विचार निश्चित कर लिया।

व्याख्या– महादेवी कहती हैं कि गाय उनके बंगले पर पहुँची। उसको देखकर उनके परिचित लोग तथा सेवकगण उसके प्रति श्रद्धा की भावना से भर उठे। श्रद्धावश उन्होंने गाय का स्वागत किया। उसको लाल–सफेद गुलाब के फूलों की माला पहनाई गई। उसके माथे पर केशर और रोली का बड़ा टीका लगाया गया। एक दीपक में चारों ओर बत्तियाँ जलाकर उसकी आरती उतारी गई। उसको दही और पेड़ा खिलाया गया। उसका नाम गौरांगिनी रखा गया। उसे गौरा कहकर पुकारा गया। गाय पर पूजा–अर्चना का क्या प्रभाव हुआ, यह ज्ञात नहीं परन्तु ऐसा लगा कि वह बहुत खुश थी। आरती के दीपक की लौ उसकी बड़ी काली–काली और चमकीली आँखों में पड़कर प्रतिबिम्बित हो रही थीं और यह भ्रम हो रहा था कि अनेक दीपक जल रहे हैं। उस छवि को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे रात में अंधेरे के कारण काली दिखाई देने वाली पानी की लहर पर किसी ने अनेक दीपक जलाकर प्रवाहित कर दिये हों।

विशेष–

1. गाय के महादेवी के बंगले पर पहुँचने पर श्रद्धावश हुए उसके स्वागत का वर्णन है।
2. वर्णन काव्यात्मक, सजीव तथा चित्र जैसा बन पड़ा है।
3. संस्कृतनिष्ठ भाषा, शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग हुआ हैं।
4. शैली वर्णनात्मक है।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शिनी थी, विशेषतः उसकी काली बिल्लौरी आँखों का तरल सौन्दर्य तो दृष्टि को बाँधकर स्थिर कर देता था। चौड़े, उज्ज्वल माथे और लम्बे तथा साँचे में ढले हुए से मुख पर आँखें बर्फ में नीले जल के कुण्डों के समान लगती थीं। उनमें एक अनोखा विश्वास का भाव रहता था। गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों–जैसा चकित विस्मय न होकर एक आत्मीय विश्वास ही रहता था। उस पशु को मनुष्य से यातना ही नहीं, निर्मम मृत्यु तक प्राप्त होती है, परन्तु उसकी आँखों के विश्वास का स्थान न विस्मय ले पाता है, न आतंक। महात्मा गाँधी ने **गाय करुणा की कविता है**, क्यों कहा, यह उसकी आँखें देखकर ही समझ में आ सकता है।

उत्तर :

संदर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित महादेवी वर्मा द्वारा रचित संस्मरणात्मक रेखाचित्र **गौरा** से लिया गया है। महादेवी की बहन श्यामा ने उनको गाय पालने का सुझाव दिया और एक बछिया उनके बँगले पर भेजी। महादेवी ने देखा कि गाय अत्यंत सुन्दर थी। उनके बँगले पर उसका स्वागत–सत्कार हुआ और उसका नाम गौरा अथवा गौरांगिनी रखा गया।

व्याख्या– महादेवी कहती हैं कि गौरा देखने में वास्तव में बहुत ही सुन्दर थी। विशेष रूप से उसकी काली–काली आँखें अत्यधिक सुन्दर लगती थी। देखने वाला उसकी सुन्दरता में खो जाता था। उसका माथा चौड़ा और उजला था। उसका चेहरा लम्बा तथा सुडौल था। उसके श्वेत मुख पर आँखें ऐसी लगती थीं मानो बर्फ से घिरे हुए नीले पानी के कुंड हों। उसकी आँखों में अनोखी विश्वास की भावना भरी हुई थी। हिरण की आँखों में एक प्रकार का आश्चर्य और विस्मय का भाव व्याप्त रहता है। उसके विपरीत गाय की आँखों में अपनेपन से युक्त विश्वास की भावना ही रहती है। उसको अपने आसपास के लोगों पर अपना होने तथा उन पर विश्वास होने का भाव रहता है।

ऐसे पशु गाय को मनुष्य सताता और पीड़ित करता है। वह निर्दयतापूर्वक उसे मार भी देता है। परन्तु गाय की आँखों में विश्वास का भाव बना ही रहता है, उसका स्थान आश्चर्य का भाव नहीं लेता। न भय की भावना ही उनमें पैदा होती है। महात्मा गाँधी ने गाय को करुणा की कविता कहा है। गाय की आँखों में समाहित भाव को देखकर ही माना जा सकता है कि गाँधीजी ने ऐसा क्यों कहा होगा?

विशेष–

1. साहित्यिक भाषा, संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

2. शैली वर्णनात्मक है।
3. गौरा की मनोहरता को चित्रित किया है।
4. लेखिका ने बताया है कि गाय में मनुष्यों के प्रति विस्मय तथा भय का भाव न होकर एक प्रकार के विश्वास का भाव ही पाया जाता है।
5. **गौरा** एक संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो महादेवी की **मेरा परिवार** पुस्तक से लिया गया है।

17. कल और आज कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए। 6

उत्तर :

कल और आज कविता में ऋतु-चक्र का अत्यन्त सजीव अंकन हुआ है। इसमें कवि ने ग्रीष्म ऋतु के बाद वसंत ऋतु की मनोहरता का सुन्दर चित्रण किया है। ग्रीष्म ऋतु की घोर-घोर दुरूहता के कारण चारों तरफ हताशा और निराशा छाई रहती है। इस ऋतु में किसान हताश एवं उदास नजर आते हैं; ऐसा प्रतीत होता है कि वे दुःखी होकर मानो प्रकृति को दुर्वचन कहने लगते हैं। गोरैया जैसे पक्षियों का समूह धूल स्नान करता दिखाई देता है। खेतों की मिट्टी पत्थर के समान कठोर हो गई है। मेंढ़क भू-गर्भ में छिपे हुऐ हैं। आसमान उदास और बेरंग है, लेकिन वर्षा ऋतु आते ही जैसे सब कुछ बदल जाता है। वर्षा रानी अपनी छोटी-छोटी बूँदों की पायल पहनकर उन्हें छमकाती दिखाई देती है। झींगुरों का समूह उसके स्वागत में अविराम शहनाई बजाने लगते हैं। मोर लम्बी और मधुर ध्वनि से जोरों से कूकने लगते हैं। वे नाचकर, थिरककर अपने हर्ष को व्यक्त करते हैं। प्रकृति के उपादानों में नई जान आ जाती है। ग्रीष्म में झुलसी और सूखकर काली पड़ी दूब की शिराओं में रक्त प्रवाह होने लगता है। वह हरी-भरी होकर लहराने लगती है और ग्रीष्म ऋतु अपने डेरे, तम्बू, उखाड़कर विदा हो जाती है।

अथवा

17. उषा की लाली कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

उषा की लाली प्रगतिशील कवि नागार्जुन की एक लघु कविता है। इसमें कवि का प्रकृति प्रेम व्यक्त हुआ है। कवि बाल रवि की अप्रतिम छटा से इतना अभिभूत होता है कि उसे निरन्तर देखता ही रह जाता है। यह सत्य है कि सूर्योदय के समय प्रकृति की शोभा जादुई होती है, वह दर्शक को अपने सौन्दर्य के वशीभूत कर लेती है। कवि उस आभा को अपने हृदय और नेत्रों में समा लेना चाहता है। उसे यही भय है कि सूर्योदय की यह जादुई आभा कहीं बेरंग न हो जाए, अपरूप न हो जाए।

18. निम्नांकित यातायात संकेतों का क्या अर्थ है? 6

(1) 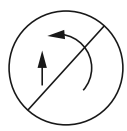

(2) 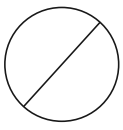

(3) 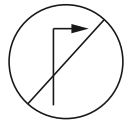

(4) 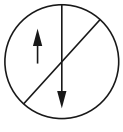

उत्तर :

1. इस चिह्न का अर्थ है- ओवर टेकिंग पर प्रतिबन्ध है।
2. इस चिह्न का अर्थ है- संकेत प्रतिबन्ध अब समाप्त हो गये हैं।
3. इस चिह्न का अर्थ है- वाहन को दाहिने मोड़ने पर प्रतिबन्ध है।
4. यह चिह्न संकेत करता है कि एक ही रास्ता है, एक ही ओर वाहन ले जा सकते हैं।

अथवा

18. कार आदि छोटे वाहनों को चलाते समय क्या सावधानी रखनी चाहिए?

उत्तर :

1. कार आदि छोटे वाहनों को निर्धारित गति में ही चलाना चाहिए।
2. अपनी ही लाइन में चलना चाहिए, ओवरटेक नही करना चाहिए।
3. लाइन बदलते समय इण्टीकेटर का उपयोग करना चाहिए।
4. वाहन चलाते समय सीट बैल्ट का प्रयोग करना चाहिए।
5. लाल बत्ती का उल्लंघन कभी नहीं करना चाहिए।
6. वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग नहीं करना चाहिए।
7. नशा नहीं करना चाहिए तथा ट्रैफिक के नियमों का पालन करना चाहिए।

19. ग्रीष्म ऋतु में बादल और हवा की क्या स्थिति हो गई है? 2

उत्तर :

ग्रीष्म ऋतु में बादल गरम हवा के साथ शरीर को ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो उसका सेंक कर रही हो। हवा में एक चुभन होती है और लोगों के हृदय में घनी शीतल छाया में जाकर आराम करने की इच्छा होती है।

20. सभी पुकार करके क्या कहते हैं? 2

उत्तर :

सभी पुकार करके ये ही कहते हैं कि ईश्वर दयालु है। दया के सागर हैं। उनकी दया होने पर ही मनुष्य के सभी कार्य सहज में ही पूरे हो जाते हैं।

21. एक कन्या के मन में वैवाहिक जीवन की कैसी कल्पनाएँ होती हैं? 2

उत्तर :

हर कन्या विवाह से पूर्व वैवाहिक जीवन के विषय में विभिन्न सुन्दर, मधुर और रंगीन कल्पनाएँ करती हैं। वह सोचती है कि विवाह के बाद उसका भी अपना घर-परिवार होगा। पति होगा, बच्चे होंगे। ससुराल में सब उससे प्यार करेंगे। उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करेंगे। वह सुन्दर वस्त्रों और गहनों से सज-धजकर सबका मन मोह लेगी। अपने आचरण से सबको प्रसन्न रखेगी, नये सम्बन्ध बनेंगे, जिनका वह निष्ठापूर्वक निर्वाह करेगी।

22. पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना क्या उनके अनपढ़ होने का सबूत है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर :

पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना उनके अनपढ़ होने का सबूत नहीं हैं, क्योंकि उस जमाने में प्राकृत ही आम जनता की भाषा थी। उस समय अनेक ग्रन्थ प्राकृत भाषा में ही रचे गये। भगवान शाक्यमुनि और उनके शिष्य प्राकृत भाषा में ही धर्म उपदेश देते थे। बौद्धों और जैनों के धर्म-ग्रन्थ भी प्राकृत भाषा में ही रचे गये। उस समय संस्कृत बहुत कम लोग बोलते थे, नाटकों में सर्वसाधारण जनों एवं स्त्रियों की भाषा प्राकृत रखने का ही नियम था।

23. तुम्हारी निन्दा वही करेगा जिसकी तुमने भलाई की है। कथन को स्पष्ट करें। 2

उत्तर :

जिस व्यक्ति की तुम भलाई करोगे वही व्यक्ति तुम्हारी निन्दा करेगा, क्योंकि सम्बन्धित व्यक्ति तुम्हारा विश्वास प्राप्त कर तुम्हारे बारे में सब कुछ जान लेगा और उसके मन से तुम्हारे व्यक्तित्व का वह प्रभाव समाप्त हो जायेगा जो दूसरों के मन पर अभी तक बना हुआ है। फलस्वरूप तुमसे काम निकल जाने के बाद वह स्वयं तुम्हारी निन्दा करने लगेगा। काम पड़ने पर तो वह प्रशंसा करेगा, प्रत्येक क्षण आगे-पीछे रहेगा, परन्तु काम बन जाने पर वह पीठ पीछे निन्दा करता रहेगा।

24. सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित आपके कोई चार कर्त्तव्य लिखिए। 2

उत्तर :

सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित हमारे चार कर्त्तव्य निम्न प्रकार हैं-

1. सड़क पर दुर्घटना होने पर दुर्घटना स्थल से बचकर निकलने के स्थान पर घायलों की मदद करना।
2. लोगों को गलत जगह पर गाड़ी पार्क करना, शराब पीकर गाड़ी चलाना, गाड़ी चलाते समय मोबाइल पर बातें करना आदि के दुष्परिणामों से अवगत कराना।
3. सड़क पर क्रोध का प्रदर्शन तथा लोगों के साथ दुर्व्यवहार न करना। ऐसी स्थिति में अपने ऊपर तथा परिवार के सदस्यों पर नियंत्रण रखना।
4. जब तक गाड़ी चलाने का लाइसेंस न मिले, तब तक गाड़ी न चलाना और निर्धारित आयु से पूर्व गाड़ी नहीं चलाना।

25. कवि ने आसमान को बदरंग क्यों बताया है? 1

उत्तर :

ग्रीष्म ऋतु में धूलभरी आँधियाँ चलती हैं, जिसके कारण आसमान बदरंग हो जाता है।

26. अपने चेहरे पर मत रीझना का क्या तात्पर्य है? 1

उत्तर :

इस पंक्ति का तात्पर्य है कि माँ ने अपनी बेटी को समझाया कि ससुराल में वह दूसरों की प्रशंसा को सुनकर इतराये नहीं। क्योंकि सुन्दरता भी कई बार द्वेष तथा ईर्ष्या का कारण बन जाती है।

27. पीपा के आने पर स्वामी रामानन्द ने आश्रम का दरवाजा बंद क्यों करवा दिया? 1

उत्तर :

स्वामी रामानन्द स्वयं को निर्धन मानते थे तथा राजा पीपा जैसे धनवान व्यक्ति से मिलना नहीं चाहते थे।

28. प्रेमचन्द उर्दू में किस नाम से लेखन कार्य करते थे? 1

उत्तर :

प्रेमचन्द उर्दू में नवाबराय के नाम से लेखन कार्य करते थे।

29. कवि ऋतुराज का साहित्यिक परिचय दीजिए। 4

उत्तर :

राजस्थान में चालीस वर्षों तक अध्यापन-कार्य करने के बाद कवि ऋतुराज साहित्य-साधना में जुड़े रहे। वामपंथी विचारधारा का प्रबल समर्थक होने से इन्होंने सामाजिक चेतना को सशक्त अभिव्यक्ति दी है तथा मानवता के पक्षधर रूप में मूर्धन्य साहित्यकार माने जाते हैं। ये अपने आक्रामक तेवर, संश्लिष्ट भाव-बोध, कलात्मक अभिव्यक्ति और समाजवादी विचारधारा के अग्रणी कवि हैं। ऋतुराज ने समाज की मुख्यधारा से अलग हुए एवं उपेक्षित लोगों की चिन्ताओं को अपने लेखन का विषय बनाया है। अपने आसपास के दैनिक जीवन में घटित सामाजिक विसंगतियों और विडम्बनाओं पर गहन दृष्टि डालकर वास्तविकता का चित्रण करने में इन्होंने स्वयं के अनुभवों का सुन्दर समावेश किया है।

कवि ऋतुराज की साहित्य-साधना निरन्तर चल रही है। अब तक इनके आठ काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, इनके नाम हैं- मैं आंगिरस, एक मरणधर्मा और अन्य, पुल पर पानी, सुरत-निरत, अबेकस, नहीं प्रबोध-चन्द्रोदय, लीला मुखारबिन्द तथा आशा नाम नदीं इन्हें सोमदत्त, परिमल सम्मान, मीरां पुरस्कार, पहल सम्मान तथा बिहारी पुरस्कार मिल चुके हैं।

30. लक्ष्मीनारायण रंगा के व्यक्तित्व-कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

उत्तर :

राजस्थान के सृजनधर्मियों में लक्ष्मीनारायण रंगा का नाम अत्यन्त चर्चित रहा है। बीकानेर से उच्च शिक्षा प्राप्त कर ये राजस्थान सरकार के भाषा विभाग में मुख्य अनुवादक बनकर जयपुर में नियुक्त हुए। बचपन से ही उनकी नाट्य-विधा में विशेष रुचि रही। नाटक के लेखक, निर्देशन एवं अभिनय में ये सक्रिय भाग लेते रहे। इन्होंने हिन्दी एवं राजस्थानी दोनों भाषाओं में साहित्य-रचना की। इन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं समसामयिक विषयों पर विभिन्न नाटक एवं एकांकी लिखे हैं। इनकी रचनाएँ आकाशवाणी से प्रसारित होती रहीं। इनके द्वारा रचित नाटक एवं एकांकी अभिनय तथा रंगमंच की दृष्टि से अत्यधिक सफल रहे। इन्हें राजस्थानी भाषा में रचित **पूर्णमिदम्** (रंगनाटक) कृति पर साहित्य आकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

लक्ष्मीनारायण रंगा की विभिन्न रचनाओं में हरिया सूवटिया कविता संग्रह तथा टमरकटूँ, बाल-कहानियाँ राजस्थानी भाषा में लिखित हैं। हिन्दी में टूटती नालन्दाएँ, रक्तबीज, तोड़ दो ये जंजीरें, एक घर अपना नाटक-एकांकी संग्रह तथा दहेज का दान, हम नहीं बचेंगे कहानी-संग्रह प्रकाशित हैं। इनके नाटकों की भाषा-शैली ओजपूर्ण तथा संवाद प्रवाहमय व सफल हैं।

□□□□□□□